शिक्षा या केवल डिग्री ?
खोती हुई राष्ट्रीयता और सर्वांगीण विकास

न्यायाधीश नगेन्द्र कुमार जैन
(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय)

शिक्षा केवल अक्षर– ज्ञान नहीं–

शिक्षा किसी समाज की आत्मा होती है। वह राष्ट्र की रीढ़ है, उसकी चेतना है और उसकी दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति हैं सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को केवल पढ़ा लिखा नहीं, बल्कि जाग्रत, संवेदनशील, कर्त्तव्यनिष्ठ और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक बनाए। हमारे समय की शिक्षा इसी उद्देश्य को लेकर चलती थी– व्यक्ति– निर्माण के माध्यम से राष्ट्र–निर्माण।

आज जब हम पीछे मुडकर देखते है, तो यह स्पष्ट होता है कि तक विद्यालय केवल इमारते नहीं थे, वे संस्कार–स्थल थे, शिक्षक केवल विषय पढाने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श थे, और शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला थी।

विद्यालयी जीवनः अनुशासन और संस्कार की नींवः

हमारे काल में विद्यालय की शुरूआत प्रार्थना सभा से होती थी। यह सभा केवल ईश्वर–स्मरण नहीं, बल्कि दिन भर की दिशा तय करने वाली प्रक्रिया थी। उसी समय उपस्थिति ली जाती थी, जिससे बच्चों में समय का मूल्य और अनुशासन का संस्कार बचपन से ही विकसित होता था। प्राचार्य द्वारा दिये गये संक्षिप्त लेकिन सारगर्मित उपदेश जीवन भर स्मरण रहते थे। सत्य, अहिंसा, परिश्रम, ईमानदारी, संयम और राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्य केवल शब्द नहीं थे, बल्कि जीवन–व्यवहार का हिस्सा बनते थे। विद्यालय से छुट्टी के समय राष्ट्रगान गाया जाना अनिवार्य था। यह क्रिया बच्चों के मन में यह भाव भरती थी कि वे केवल अपने परिवार या स्वयं के लिए नहीं, बल्कि एक महान राष्ट्र के उत्तरदायी नागरिक है।

शारीरिक शिक्षा और खेलः स्वस्थ शरीर में स्वस्थ राष्ट्रः

शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्तंभ था– शारीरिक विकास, खेलकूद, पी.टी., ड्रिल, योग, सूर्यनमस्कार और दौड़ जैसे अभ्यास बच्चों को स्फूर्ति और स्वास्थ्य प्रदान करते थे। खो–खो कबड्डी, मलखंभ, कुश्ती, एथलेटिक्स जैसे देशज खेल केवल मनोंरजन नहीं थे, बल्कि साहस, संतुलन धैर्य और टीम भावना के शिक्षक थे। इन खेलों के माध्यम से बच्चे जीत के साथ विनम्रता और हार के साथ धैर्य सीखते थे। यही गुण आगे चलकर उन्हें जीवन के संघर्षो में टूटने नहीं देते थे।

श्रम और कौशलः स्वावलंबन की शिक्षाः

हमारे समय में शिक्षा का अर्थ केवल दिमागी मेहनत नहीं थां बच्चों को हाथों से काम करने की आदत डाली जाती थी। विद्यालयों मे मिट्टी के खिलौने बनाना, चित्रकारी, सिलाई, बढईगीरी, बिजली कार्य, रेडियों मरम्मत जैसे प्रथिमिकी, दिये जाते थें इसका उद्देश्य यह नहीं था कि हर बच्चा कारीगर बने, बल्कि

यह था कि–

- यह श्रम का सम्मान करना सीखे,
- किसी भी कार्य को छोटा न समझे,
- और आवश्यकता पड़ने पर अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

यही शिक्षा बच्चों को रोजगारोन्मुख और आत्मनिर्भर बनाती थी।

एन.सी.सी., स्काउटिंग और सामाजिक चेतनाः

एन.सी.सी., स्काउटिंग और गाइड़ जैसे कार्यक्रम बच्चों में सेवा, अनुशासन और नेतृत्व के गुण विकसित करते थे। राष्ट्रसेवा, आपदा में सहायता, स्वच्छता अभियान और सामूहिक कार्यो के माध्यम से बच्चे समाज से जुडते थे। इन गतिविधियों से यह भाव विकसित होता था कि राष्ट्र की रक्षा और सेवा केवल सैनिकों की जिम्मेदारी नहीं बल्कि हर नागरिक का कर्त्तव्य हैं।

आज की शिक्षा प्रणालीः सुविधाएँ बढ़ी संस्कार घटे

आज की शिक्षा–प्रणाली पर दृष्टि डाले तो एक विरोधाभास दिखाई देता है। भव्य भवन, स्मार्ट क्लास, ए.सी. कमरे और महंगे उपकरण है, परन्तु संस्कार, अनुशासन और राष्ट्रबोध का अभाव स्पष्ट दिखता है। पी.टी. और खेलकूद के पीरियड टाईम–टेबल में तो है, परन्तु मैदान खाली है। कंप्यूटर शिक्षा के नाम पर बच्चों को मशीनों का आदी बनाया जा रहा है, सृजनशील नही। विद्यालयों में मोटी फीस, मंहगी किताबें, ड्रेस और अतिरिक्त शुल्क ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है। विडंबना यह है कि इतनी फीस के बाद भी बच्चों को ट्यूशन जाना पड़ता है।

ज्ञान का विस्फोट, विवेक का अभावः

आज का बच्चा तकनीक से परिचित है, परन्तु अपने देश की आत्मा से अपरिचित है उसे अंतराष्ट्रीय किकेटरों के आंकडे याद है, लेकिन वह नहीं जानता कि–

हमारे स्वतंत्रता सेनानी कौन थे, हमारी नदियां, पर्वत और सीमाएँ क्या है, हमारे महापुरूषों ने किन मूत्यों के लिए बलिदान दिया। ऐसी शिक्षा सूचना तो देती है संस्कार नहीं

राष्ट्रप्रेम के बिना शिक्षाः खोखली इमारतः– जिस शिक्षा में राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य का बोध न हो जिसमें समाज के प्रति उत्तरदायित्व न हो, और जिसमें त्याग, सेवा और प्रेम का संस्कार बोध न हो– वह शिक्षा राष्ट्र को मजबूत नहीं, कमजोर बनाती है। आज समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार, स्वार्थ, हिंसा और संवेदनहीनता का एक बड़ा कारण यही संस्कारहीन शिक्षा है।

आवश्यकताः शिक्षा का पुनर्जागरणः– आज समय की मांग है कि हम शिक्षा को पुनः उसके मूल उद्देश्य की ओर ले जाएं। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए। जो चरित्र निर्माण– करें, जो श्रम को सम्मान दे, जो राष्ट्रभक्ति को व्यवहार बनाए। विद्यालयों को पुनः संस्कार केन्द्र बनाना होगा, शिक्षकों को पुनः गुरू का स्थान देना होगा, शिक्षा का पुनः सेवा बनाना होगा, व्यवसाय नहीं। आज भी मैं अपने श्री महावीर स्कूल के अध्यापक डंडिया साहिब तथा अन्य अध्यापकों को याद कर नमन करता हूँ।

शिक्षा से राष्ट्र का भविष्यः– यदि हमें एक सशक्त, स्वाभिमानी और समृद्ध भारत चाहिए तो हमें शिक्षा को संस्कार, श्रम और राष्ट्रबोध से जोड़ना ही होगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं बल्कि चरित्रवान नागरिक और समर्थ राष्ट्र बनाना होना चाहिए।

यही सच्ची शिक्षा हैं– यही राष्ट्र का भविष्य है।
